पाठ–7

कहता है जोकर...

–प्रह्लाद अग्रवाल

पाठ की संरचना

7.1 आइए शुरू करें
7.2 उद्देश्य
7.3 मूल पाठ
7.4 आइए समझें
7.5 भाषा-शैली

7.1 आइए शुरू करें

फिल्में हम सभी देखते हैं। वे हमारा मनोरंजन करती हैं, साथ ही हमें कई संदेश भी देती हैं। कुछ फिल्में ऐसी होती हैं, जिन्हें एक बार देख लेने के बाद हम कभी भूल नहीं पाते। उसकी कहानी, कलाकारों का अभिनय, उनके संवाद, गीत आदि हमारी स्मृतियों में बस जाते हैं। राजकपूर की फिल्म 'मेरा नाम जोकर' एक ऐसी ही फिल्म है। राजकपूर ने इस फिल्म में राजू यानी 'जोकर' की भूमिका निभाई थी। राजकपूर के बारे में कहा जाता है कि फिल्मों में वे जितना संवादों के जरिए बोलते थे, उतना ही अपनी आँखों से भी बोलते थे। यह फिल्म उनकी अभिनय प्रतिभा का अनुपम उदाहरण है, साथ ही बेहद संदेशपरक भी। 'जोकर' यह संदेश देता है कि जिंदगी कभी रुकती नहीं। वह यह भी संदेश देता है कि हमें हमेशा इसकी कोशिश करनी चाहिए कि कोई हमसे दुखी न हो। हमसे किसी के चेहरे पर मुस्कान और खुशियाँ ही आयें, उदासी और दुख नहीं।

7.2 उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- फिल्म की कहानी बता सकेंगे।
- फिल्म का संदेश बता सकेंगे।

- एक जोकर के जीवन के विभिन्न पक्षों का परिचय दे सकेंगे।
- एक कलाकार और एक व्यक्ति के रूप में राजकपूर की विशेषताएँ बता सकेंगे।
- उत्पत्ति के आधार पर शब्दों की पहचान कर सकेंगे।
- पाठ में आए मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कर सकेंगे।
- इस पाठ की भाषा-शैली पर टिप्पणी कर सकेंगे।
- लेखक का संक्षिप्त परिचय दे सकेंगे।

क्रियाकलाप

गीत और संगीत फिल्मों का एक बेहद महत्त्वपूर्ण हिस्सा होते हैं। राजकपूर की फिल्मों में इन पर विशेष ध्यान दिया जाता था। वे स्वयं कई वाद्ययंत्र बहुत कुशलता से बजाते थे। उनकी फिल्मों के गीत आज भी लोकप्रिय हैं। वे जिंदगी की सच्चाई से जुड़े होते थे और उनमें संदेश होता था। जैसे- 'मेरा जूता है जापानी', 'आवारा हूँ, आवारा हूँ', 'सजन रे झूठ मत बोलो' आदि। आप उनकी फिल्मों से दस गीतों का चयन करें, और विचार करें कि उन गीतों का संदेश क्या है?

7.3 मूल पाठ

'जोकर' 1970 के दिसंबर में अखिल भारतीय स्तर पर एक साथ प्रदर्शित हुई। प्रत्यक्ष रूप से तो इसके निर्माण में लगभग छह वर्षों का समय और एक करोड़ रुपया लगा था, किंतु अप्रत्यक्ष रूप से राजकपूर की पूरी जिंदगी इस सपने के साथ जुड़ी हुई थी। 'जोकर' अपने समय की सबसे महँगी फिल्म थी और निश्चय ही राजकपूर इसके माध्यम से लूटने के लिए नहीं, अपने कलाकार की मुक्ति की उद्दाम आकांक्षा से उद्वेलित होकर निकले थे। 'जोकर' का तमाशा लगातार लोगों ने सराहा था, उसे सिर-आँखों पर बिठाया था, लेकिन उसकी अंदरूनी पीड़ा से तादात्म्य स्थापित करने से उन्होंने कतई इनकार कर दिया। 'जोकर' में वे उस मसखरे को नहीं ढूँढ़ पाए जिसकी तलाश में वे लंबी-चौड़ी उम्मीदें लगाए सिनेमाघरों तक खिंचे चले आए थे।

'जोकर' के बचपन की भूमिका राजकपूर के दूसरे बेटे ऋषि कपूर ने निभाई थी जिसे राजकपूर ने 1973 में 'बॉबी' में नायक के रूप में पेश किया और 'बॉबी' की अद्वितीय सफलता ने उसे रातों-रात स्टार बना दिया। बचपन में राजू क्राइस्ट की उदास मूर्ति देखकर अपनी टीचर से पूछता है-'मैंने क्राइस्ट को जहाँ देखा है, जब भी देखा

है, उदास देखा है, कभी हँसते हुए नहीं देखा। ऐसा क्यूँ? टीचर उसकी बाल-सुलभ जिज्ञासा शांत करने के लिए कहती है–'क्योंकि उसके बच्चे, सारी दुनिया के आदमी दुखी हैं। उनके दुख में वह भी दुखी हो जाता है।' और राजू जवाब देता है–'मैं कभी उदास नहीं होऊँगा। आय विल मेक क्राइस्ट लाफ।' वह उसे भी हँसाना चाहता है, जो सारी दुनिया के दुखों से दुखी है। यानी वह सारी दुनिया के दुखों में मुसकुराहटों की चिंगारी भर देना चाहता है।

'जोकर' वस्तुतः राजकपूर के फिल्म चरित्र की दार्शनिक व्याख्या है। एक कलाकार का जीवन दर्शन; जिसका हँसना-रोना सब दूसरों को खुश करने के लिए है। जिसकी जिंदगी सबके लिए तमाशा है। एक ऐसा तमाशा जो कभी खत्म नहीं होता। इसीलिए तो जोकर की माँ की मृत्यु पर जब जोकर की आँखें डबडबा आई हैं, वह आँखों से और चेहरे की एक-एक लकीर से बोल रहा है–मैं कैसे हसाँऊ दुनिया भर को इस समय? आखिर मैं तो एक आदमी हूँ। पर नहीं। सर्कस का मालिक जोकर से कहता है–'राजू मत भूलो, तुम एक जोकर हो और जोकर कभी नहीं रोता। जाओ, तुम्हारा टाइम आ गया है। शो मस्ट गो ऑन!'

हाँ, ये समूची जिंदगी एक 'शो' ही तो है, जिंदगी जो कभी रुकती नहीं। आदमी मर के भी नहीं मरता। मृत्यु सिर्फ परिवर्तन है जो जिंदगी की निरंतरता के लिए अनिवार्य है। जब जिंदगी नहीं रुकती तो जोकर का तमाशा कैसे रुक सकता है?

'जोकर' का तमाशा शुरू होता है उसके आखिरी शो की घोषणा के साथ, जिसमें उसने तीन महिलाओं को विशेष रूप से आमंत्रित किया है। मैरी–उसकी स्कूल टीचर, मैरीना–उसकी बेहद अजीज दोस्त और सोवियत रूस की बेहतरीन ट्रेपीज आर्टिस्ट! और मीना या उसकी अजीज मीनू मास्टर–जो उसके सहारे सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ते हुए रोशनियों की दुनिया में पहुँच गई। ये तीनों जिन्होंने जोकर की जिंदगी में खुशबुएँ बिखेरी थीं। जोकर ने उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया है इस आखिरी शो के लिए। और दर्शकों से खचाखच भरे सर्कस के तंबू में जोकर का आखिरी शो देखने के लिए आई हैं उसकी टीचर मैरी, पति डेविड के साथ; रूस से खास इसलिए आई मैरीना, और मीना अपने किस्मत के मालिक कुमार के साथ। सर्कस का मालिक महिंदर जोकर के अंतिम शो की घोषणा करता है–जिसमें यह भी सम्मिलित है कि उसने दुनिया से अपनी जिंदगी में जो कुछ पाया है; सुख-दुख, आशा-निराशा, मुहब्बत-नफरत, आँसू-मुस्कानें; उन सबको कहकहों और खुशियों में तब्दील कर सारी दुनिया को लुटा दिया है। और इसके बाद सर्कस के रिंग में एक ऑपरेशन-थिएटर दिखलाई पड़ता है जहाँ बड़े-बड़े गैस-सिलेंडर, एक विशाल खून की बोतल और ऑपरेशन थिएटर पर दैत्याकार छुरियाँ और कैंचियाँ रखी हुई हैं। इसके साथ ही मौजूद है वहाँ डॉक्टरों और

नर्सों की भीड़। ये सब मौजूद हैं वहाँ एक ऐसे आदमी का ऑपरेशन करने के लिए जिसका दिल जरूरत से ज्यादा बड़ा हो गया है। छोटे-छोटे स्वार्थों में डूबी हुई दुनिया में बड़े दिल से खतरनाक और क्या चीज हो सकती है?

अंधकार में डूबे सर्कस के तंबू में ऊपर से धीरे-धीरे जगमगाता हुआ दिल के आकार का एक विशाल गुब्बारा नीचे उतर रहा है और उस गुब्बारा के बीच से निकलता है–जोकर। सारे डॉक्टर आश्चर्यचकित हैं, वह दिल है या आदमी? डॉक्टर उसे बतलाते हैं कि अब सारी दुनिया लगातार छोटी होती जा रही है और उसका दिल बड़ा होता चला जा रहा है। दिल बड़ा और दुनिया छोटी–यह ऐसी स्थिति है जिसका तुरंत इलाज होना चाहिए। और सारे डॉक्टर जोकर को पकड़कर ऑपरेशन टेबुल पर लिटा देते हैं। यहाँ शुरू होता है एक कौतुक भरा तमाशा। बड़ी-बड़ी छुरियाँ, कैंचियाँ और हथौड़ों के जरिए जोकर का ऑपरेशन किया जा रहा है। बड़े डॉक्टर ने ऑपरेशन करके जोकर का दिल निकाल लिया। एक डॉक्टर से दूसरे डॉक्टर के हाथों में जाते हुए दिल और बड़ा होता चला जा रहा है। वे कहते हैं–इस दिल में पूरा सर्कस, सारा शहर..... नहीं-नहीं सारी दुनिया ही समा सकती है ! और राजू....!

और राजू टेबल से उतरकर अपनी दोनों बाँहें फैलाए सारी दुनिया से पूछ रहा है–किसी ने देखा है मेरा दिल, कोई जानता है किसने चुराया है मेरा दिल? मैरी, मैरीना और मीना–तीनों से वह बाँहें फैलाए आँखों की जुबान में पूछ रहा है–कुछ कह रहा है–टटोलकर देखो अपने भीतर कहीं मेरा दिल, धड़कता हुआ पाओगे। दुनिया को मुहब्बत लुटानेवाले जोकर को भी मुहब्बत का एक कतरा चाहिए। तीनों ने राजू से तहेदिल से बेपनाह मुहब्बत की। लेकिन क्या एक जोकर को अपना बना पाना कोई आसान काम है? जिसके दिल में सारी दुनिया के आँसू और मुसकुराहटें समा सकें, उसको सिर्फ अपने एक दिल में कौन कैद कर सकता है? अब राजू लौट आया है उन्हीं डॉक्टरों के पास। अब उसकी आँखों में ऑपरेशन के पहले जैसी चमक नहीं है। खोई-खोई-सी आँखें हैं उसकी। डॉक्टर उसे उसका दिल वापस लौटाते हुए हिदायत देते हैं कि वह उसे सँभालकर रखे। यदि वह इसी तरह बढ़ता रहे तो एक दिन उसमें सारी दुनिया समा जाएगी। जोकर खुश है-बहुत खुश। क्या ऐसा हो सकेगा कि उसके दिल में सारी दुनिया का दर्द समा जाए? इससे बढ़कर उसे क्या चाहिए? कोई भी जिंदगी में इससे बढ़कर और क्या पा सकता है? उसे किसी बात का अफसोस नहीं। राजू अपनी खुशियों में डूबा हुआ अपने दिल को बार-बार उछाल रहा है, और अचानक उसका दिल सर्कस के रिंग में गिरकर सैकड़ों टुकड़ों में बिखर गया है। और वह खुश हो रहा है उन टुकड़ों में झाँकती हुई अपनी जिंदगी को देखकर। और यहाँ से शुरू होती है जोकर की कहानी। जिस कहानी के साथ जुड़ी हुई हैं–मैरी, मैरीना और मीना।

मैरी–जिसने उसकी किशोरावस्था को भावुक संवेदना दी। मैरीना–जिसने उसके जवान होते दिल को धड़कना सिखाया। और मीना, उसकी प्यारी मीनू मास्टर–जिसने मुहब्बत और दुनियादारी की चतुराई सिखलाई। वो सबके हाथों का खिलौना बना। लेकिन जोकर कभी हार नहीं मानता। उसका दिल कभी नहीं टूटता। उसकी आँखों में कभी आँसू नहीं आते। वह हर पुराना सपना टूटते ही नया सपना बुनना शुरू कर देता है। राजकपूर अपने रचनात्मक जीवन में भी इसी तरह लगातार सपने बुनते दिखलाई पड़ते हैं। सपने भले ही टूटने के लिए बने हों, लेकिन सपनों से बढ़कर उसके लिए कुछ भी नहीं। कोई सपना उसकी जिंदगी का आखिरी सपना नहीं है । इसलिए जोकर का तमाशा कभी खत्म नहीं होता। फिल्म के अंतिम दृश्य में दोनों हाथ फैलाकर दर्शकों का शुक्रिया अदा करते हुए जोकर यह निवेदन करता है कि मेरा तमाशा अभी खत्म नहीं हुआ। यह सिर्फ इंटरवल है जो पंद्रह मिनट का भी हो सकता है और पंद्रह महीनों का भी। लेकिन जोकर का तमाशा अभी खत्म नहीं हुआ।.....आप लोग जाइएगा नहीं, जोकर का तमाशा अभी खत्म नहीं हुआ। रोते और मुसकुराते जोकर का तमाशा। और सच तो यह है कि जोकर का तमाशा कभी खत्म होता ही नहीं।

एक निर्देशक और एक कलाकार के रूप में राजकपूर ने अपनी जिंदगी का सब-कुछ 'जोकर' को दिया। एक निर्माता के रूप में उन्होंने अंग्रेजी की 'लेफ्ट नो स्टोन अनटर्न्ड' कहावत चरितार्थ की। 'मेरा नाम जोकर' राजकपूर के सपनों का एक ऐसा तमाशा था जिसे वह एक साथ कलात्मक और व्यावसायिक ऊँचाइयों तक पहुँचाना चाहते थे। यूँ तो राजकपूर का पूरा कैरियर ही इसी तालमेल के जद्दोजहद की कहानी है। उनकी ख्वाहिश थी कि जोकर की दास्तान सारी दुनिया तक पहुँचे।

'जोकर' में केंद्रीय भूमिका में राजकपूर के अतिरिक्त राजेन्द्र कुमार, मनोज कुमार, धर्मेंद्र, दारा सिंह, पद्मिनी, सिमी, रूस की बैलरीना क्षण राबिनकिना, रूसी सर्कस और भारत के जेमिनी सर्कस के हजारों कलाकारों के साथ ही पहले दृश्य में हिंदी फिल्मों के अनेक हास्य कलाकार थे। राजकपूर ने निर्देशन के अतिरिक्त 'जोकर' का संपादन भी स्वयं किया था। कला निर्देशक थे एम आर आचरेकर तथा छायांकन किया था राधू कर्मकार ने। नीरज, शैली शैलेंद्र और हसरत जयपुरी के गीतों को शंकर-जयकिशन ने स्वरबद्ध किया था। गरज यह कि 'जोकर' में राजकपूर की पूरी टीम मौजूद थी सिर्फ एक शैलेंद्र को छोड़कर, शैलेंद्र जिनके गीत राजकपूर की फिल्मों की आत्मा होते थे। शैलेंद्र की कमी को किसी हद तक नीरज और हसरत जयपुरी ने पूरा किया। नीरज ने 'जोकर' को अपनी जिंदगी का एक श्रेष्ठतम गीत दिया– 'ऐ भाई जरा देख के चलो, आगे ही नहीं पीछे भी, दाएँ ही नहीं बाएँ भी, ऊपर ही नहीं, नीचे भी'। यों 'जोकर' के सभी गीत अत्यंत लोकप्रिय हुए। 'जाने कहाँ गए वो दिन' मुकेश

के स्वर में दर्द की जिंदा तस्वीर बन गया था। शंकर-जयकिशन ने 'जोकर' का संगीत तैयार करने में अपनी सारी शक्ति लगा दी थी।

'जोकर' अभिनेत्री सिमी के जीवन की सर्वश्रेष्ठ फिल्म है। 15-16 वर्ष के बालक के अपने प्रति आकर्षण, उसके प्रति अपने अदम्य स्नेह और उसे अपना न बना सकने की विवशता के द्वंद्व में छटपटाती स्कूल टीचर मैरी की भूमिका में उसने प्राण फूँक दिए हैं।

जोकर को पहली ठेस अपनी किशोरावस्था में ही लगती है, जब अपनी स्कूल टीचर मैरी के प्रति उसके तीव्र आकर्षण की परिणति डेविड के साथ उसका विवाह हो जाने पर बिछुड़ने में होती है। मैरी जो उसके लिए सब कुछ है, उससे हमेशा के लिए दूर हो जाती है। मैरी के मंगेतर की भूमिका में मनोज कुमार ने अपनी संक्षिप्त उपस्थिति में भी उल्लेखनीय अभिनय किया। विशेषकर उस दृश्य में जब राजू से जोकर की अहमियत पर उसकी बातचीत होती है। जोकर जो अपने दुखों को भूलकर दूसरों की खुशियों के लिए कहकहे लगाता है। दुनिया में सबसे कठिन है जोकर बन पाना। डेविड राजू को समझाता है कि इस दुनिया में सबसे बड़ा और असली जोकर तो ऊपरवाला है।

बड़ा होकर राजू पहुँच जाता है सर्कस में। सर्कस का मालिक महिंदर (धर्मेंद्र) और रिंग मास्टर (दारा सिंह) उसके अपने बन जाते हैं। यहीं जोकर के यौवन में मुहब्बत की किरण चमकती है ट्रेपीज आर्टिस्ट क्षण राबिनकिना के रूप में। वह एक बार पुन: मैरीना में मैरी की छवि देखता है। अपनी हस्ती को भुलाकर वह जज्बातों में डूब जाता है। राजू ही नहीं, मैरीना भी उस मसखरे को अपना दिल दे बैठती है। लेकिन मैरी की तरह मैरीना भी उसकी नहीं बन पाती। मैरी के साथ राजू की उम्र बाधा बनी थी और मैरीना के साथ देशों की दीवार बाधक हो जाती हैं। मैरीना अपने देश में अपने अपंग पिता को नहीं छोड़ सकती थी।

जोकर की जिंदगी में तीसरा प्यार बनकर आती है मीना। एक गरीब अनाथ लड़की जो लड़के का वेश बदलकर अपनी जिंदगी गुजार रही है। जब वह राजू की जिंदगी में प्रविष्ट होती है तो राजू उसके लिए सीढ़ी बन जाता है। राजू के सहारे सीढ़ी-दर-सीढ़ी चढ़ते हुए वह दौलत और शोहरत के सातवें आसमान पर जा पहुँचती है। यह दौड़ उसे ऐसे मुकाम तक पहुँचा देती है जहाँ राजू ही बेमतलब हो जाता है मीना के लिए। और एक बार फिर राजू को अपना टूटा हुआ दिल लेकर मीना की जिंदगी से बाहर हो जाना पड़ता है– हँसते हुए, खुशियाँ बिखेरते हुए। दुनिया सिर्फ उसकी मुसकुराहटें देखती है। खिलखिलाते हुए मुसकुराहटों के पीछे छिपे हुए आँसुओं को कोई नहीं पहचानता।

'जोकर' फिल्म असफल हो गई। राजकपूर की जिंदगी का सबसे बड़ा सपना मिट्टी में मिल गया। वह सपना जिसके लिए उसने अपना पूरा अस्तित्व दाँव पर लगा दिया था। सारे कलात्मक कौशल के बावजूद ऐसे कठिन चरित्र की संजीदा व्याख्या व्यावसायिक दृष्टिकोण से दो कौड़ी की साबित हुई। और राजकपूर के लिए यह सिर्फ एक करोड़ का घाटा नहीं था, जिंदगी भर की तमाम संचित कलात्मक अनुभूतियों को डुबा देने का भी सवाल पैदा करता था।

अपने समकालीन अभिनेताओं में नायक के रूप में राजकपूर सबसे पहले रिटायर हुए। 'जोकर' की असफलता ने उन्हें भीतर तक हिला दिया। 'संगम' की सफलता के बाद जो राजकपूर को जादूगर कहते थे, 'जोकर' की असफलता से वहीं जुबाने कह रहीं थीं–डूब गया राजकपूर। खत्म हो गया हमेशा-हमेशा के लिए। लेकिन जोकर का तमाशा कभी खत्म नहीं होता। राजकपूर ने यह बात बार-बार साबित की है। हिंदी फिल्मों के इतिहास में राजकपूर ऐसी शख्सियत का नाम है जो उठ-उठकर गिरा है और गिर-गिरकर उठा है। जिसने हर पराजय को चुनौती के रूप में स्वीकार किया है। उसने सिर्फ जीतना सीखा है, हारना नहीं।

एक मसखरा कितना बड़ा इंसान है, उसकी हस्ती कितनी असीम होती है, जिसे शोहरत, दौलत और मुहब्बत की जंजीरें बाँधकर नहीं रख सकतीं। जो अपना सब कुछ लुटा सकता है, दूसरों की मुसकुराहटों को जिंदा रखने के लिए। एक कलाकार का यह जीवन दर्शन 'जोकर' का अंत: संगीत है। यह फिल्म राजकपूर की सबसे निजी अनुभूति है। 'जोकर' के साथ ही राजकपूर ने नायक के रूप में विदा ली।

बोध प्रश्न

अभी आपने 'कहता है जोकर...' पाठ पढ़ा। अब आप इस पाठ से कुछ प्रश्नों के उत्तर दें। दिए गए विकल्पों में से सही का चुनाव करें :

1. 'मेरा नाम जोकर' कब प्रदर्शित हुई थी?

   (क) दिसंबर 1972 (ख) दिसंबर 1974

   (ग) दिसंबर 1976 (घ) दिसंबर 1970

2. 'मेरा नाम जोकर' का संगीत किसने दिया था?

   (क) एस डी बर्मन (ख) शंकर-जयकिशन

   (ग) सलिल चौधारी (घ) ए आर रहमान

3. राजकपूर के फिल्मों की आत्मा किसके लिखे गीत होते थे?

(क) गुलजार (ख) जावेद अख्तर

(ग) कवि प्रदीप (घ) शैलेंद्र

4. 'राजू, मत भूलो, तुम एक जोकर हो और जोकर कभी नहीं रोता। जाओ, तुम्हारा टाइम आ गया है। शो मस्ट गो ऑन!' यह किसने कहा?

(क) मैरी ने (ख) सर्कस मालिक महिंदर ने

(ग) डेविड ने (घ) मीना ने

7.4 आइए समझें

राजकपूर ने 'मेरा नाम जोकर' में 'राजू' की भूमिका निभाई थी। राजू सर्कस का जोकर था। यह फिल्म राजकपूर के लिए केवल फिल्म भर नहीं थी। इसके जरिए वे दुनिया को संदेश देना चाहते थे। वे एक कलाकार की जिंदगी से परिचित कराना चाहते थे। यह फिल्म उनके दिल के बहुत करीब थी। उनके अनेक सपने इस फिल्म से जुड़े हुए थे। पाठ के लेखक प्रह्लाद अग्रवाल ने इस फिल्म की कहानी और उसके संदेश को सुनाने के साथ-साथ राजकपूर के व्यक्तित्व और कलाकार रूप की विभिन्न विशेषताओं को इस पाठ में उभारा है।

आइए, इस पाठ को विभिन्न अंशों में बाँटकर समझने का प्रयास करें।

अंश-1

सबसे पहले पाठ के आरंभ के तीन अनुच्छेदों को समझें।

लेखक ने फिल्म का नाम 'मेरा नाम जोकर' की जगह केवल 'जोकर' ही कहा है। फिल्म के प्रदर्शन से जुड़ी सूचनाएँ देने के बाद बहुत प्रभावी ढंग से उन्होंने फिल्म के संदेश से पाठकों को परिचित कराया है।

यह फिल्म 1970 ई० के दिसंबर में प्रदर्शित हुई थी। इसके बनने में छह साल का समय और एक करोड़ रुपए लगे थे। यह अपने समय की सबसे महँगी फिल्म थी। राजकपूर ने यह फिल्म पैसा कमाने के लिए नहीं बनाई थी। वे इसके जरिए अपने भीतर के कलाकार को संतुष्ट करना चाहते थे। जोकर के माध्यम से वे समूची दुनिया को एक संदेश देना चाहते थे। वे चाहते थे कि 'जोकर' के माध्यम से एक कलाकार की जिंदगी से दुनिया परिचित हो। इस फिल्म को देखने के लिए दर्शक जुटे, पर वे